Year-8; Sept. 2017
ISSN–2231-1130
UGC Sr. No. – 48398
VEETHIKA

आध्यात्मिक बुद्धि; एक मनोवैज्ञानिक प्रत्यय

मंजुल त्रिवेदी *

आध्यात्मिक बुद्धि का प्रयोग दार्शनिको, मनोवैज्ञानिको तथा विकासात्मक चिंतको द्वारा बुद्धि लब्धि एवं भावनात्मक लब्धि के साथ आध्यात्मिक समानताएं इंगित करने के लिए किया गया है। डानाह जोहर ने अपनी पुस्तक 'रिवायरिंग द कारपोरेट ब्रेन (1997) में आध्यात्मिक बुद्धि पद का प्रयोग किया।

उसी वर्ष आस्ट्रेलियाई लेखक एवं सलाहकार कैन मोडोनेल (1997) ने अपनी पुस्तक 'इण्डो क्वालिटी दि इमोशनल एण्ड स्पिरिचुअल डाइमेशंस आफ दि ह्यूमन बींग इन आर्गनाइजेशन' में भी आध्यात्मिक बुद्धि पद का प्रयोग किया। बहुबुद्धि सिद्धान्त के प्रवर्तक हावर्ड गार्डनर (1999)ने आध्यात्मिक बुद्धि को अपने द्वारा बताई गई बुद्धियों में सम्मिलित नहीं किया क्योंकि इसका मात्रात्मक मापन संभव नहीं था। इसके अतिरिक्त गार्डनर ने अस्तित्वात्मक बुद्धि शब्द का सुझाव दिया। यद्यपि समकालीन शोधकर्ता आध्यात्मिक बुद्धि को एक प्रत्यय के रूप में स्थापित करने तथा इसके मापन हेतु उपकरण बनाने के लिए प्रयासरत रहे।

आध्यात्मिक बुद्धि का प्रयोग व्यावसायिक स्थितियों में कर्मचारियों को अभिप्रेरित करने के लिए एक साधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह कार्यस्थल में मूल्यों से संबंधित मुद्दों के समाधान हेतु एक धर्मनिरपेक्ष तथा विविधता के प्रति संवेदनशील आधार प्रदान करता है।

दैनिक समस्या समाधान तथा लक्ष्यों की प्राप्ति में आध्यात्मिक सूचनाओं का प्रयोग आध्यात्मिक बुद्धि या आध्यात्मिक बुद्धिमत्ता कही जा सकती है।

वह बुद्धि जिसके द्वारा हम अर्थ तथा मूल्यों से जुड़ी हुई समस्याओं को सम्बोधित तथा हल करते हैं। वह बुद्धि जिसके द्वारा हम अपने कार्यों तथा जीवन को एक विस्तृत, समृद्ध तथा अर्थपूर्ण सन्दर्भ में प्रस्तुत करते है, वह बुद्धि जिसके द्वारा हम इस बात का मूल्यांकन करते हैं कि कार्य करने का एक मार्ग अथवा एक जीवन मार्ग दूसरे मार्ग की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है।

– डोना जोहर, इयान मार्शल(2000)

आध्यात्मिक बुद्धि एक केन्द्रीयकृत एवं सर्वाधिक आधारभूत बुद्धि है, क्योंकि ये अन्य के लिए एक निर्देशन के स्रोत के रूप में कार्य करती है।

– स्टीफन(2002)

डानाह जोहर **ने** आध्यात्मिक बुद्धि के 12 सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है –

1. आत्मजागरूकता – इस बात को जानना कि मैं किसमें विश्वास करता हूँ तथा कौन सी चीजें मुझे प्रेरित करती हैं। मैं किन मूल्यों में विश्वास करता हूँ। स्व को समझना।
2. स्वतः स्फूर्तता – अपने समय में जीना तथा उसके प्रति प्रतिक्रिया करने वाला होना।
3. अपने अस्तित्व के प्रति जागरूकता तथा अपने सिद्धान्तों के आधार पर जीवन यापन।
4. पवित्रतावाद – सम्पूर्ण समाज तथा व्यवस्था में एक प्रकार के सम्बन्ध को देखते हुए समस्त घटना परिघटना में एक क्रमबद्धता तथा सम्बद्धता को देखना।
5. सौहार्द – सहअस्तित्व की भावना।
6. विविधताओं का सम्मान – दूसरे लोगों को स्वयं से अन्तर के कारण महत्व प्रदान करना। विभिन्नताओं के बावजूद महत्व तथा सम्मान प्रदान करना।
7. श्रेत्र स्वतंत्रता – भीड़ के विरूद्ध जाने की क्षमता, एक विशेष योग्यता तथा अपनी व्यक्तिगत सोच।
8. जीवन के नाट्य मंच पर स्वयं को चरित्र की तरह समझना।

* शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

9. क्यों पूछने की आदत? चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में समझने की कोशिश करना।
10. बिना स्वयं प्रभावित हुए परिस्थिति या समस्या को उनके विस्तृत अर्थ में समझना। परिस्थिति में शामिल होते हुए भी पक्षपातरहित होकर मूल्यांकन करना।
11. कठिनाइयों, असफलता, गलतियों से सीखने की क्षमता।
12. परिश्रम/उद्यमिता की भावना – कर्तव्यनिष्ठता।

आध्यात्मिक बुद्धि के विभिन्न प्रकारों में से एक है और यह स्वतंत्रतापूर्वक विकसित होती है। आध्यात्मिक बुद्धि को मनुष्य के मस्तिष्क तथा आत्मा के आंतरिक जीवन का उसके कार्य–व्यवहार के बाह्य जीवन में प्रकटीकरण के रूप में समझा जा सकता है। इसे खोज, जांच तथा अभ्यास द्वारा विकसित किया जा सकता है। आध्यात्मिक अनुभव भी इसके विकास में सहायता करते हैं। बुद्धिमत्तापूर्ण तथा सहानुभूतिशील व्यवहार से आध्यात्मिक परिपक्वता प्रकट होती है। अध्यात्मिक बुद्धि अर्थ दृष्टि तथा मूल्य विकास की हमारी क्षमता है। यह हमें स्वप्न देखने तथा उसे पूर्ण करने का प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है। यह हमारे विश्वासों और मूल्यों तथा हमारे कार्यों में इनके प्रयोग की ओर संकेत करती है।

हमारी आध्यात्मिक बुद्धि जितनी उच्च होगी, उतना ही हमारा 'स्व' विकसित होता है, अपने आस्तित्व के प्रति जागरूक होंगे।

कोव (2004) **के अनुसार** –

''आध्यात्मिक बुद्धि सभी बुद्धियों में केन्द्रीय एवं आधारभूत बुद्धि है क्योंकि यह शेष के लिए मार्गदर्शन स्रोत के रूप में कार्य करती है।''

डोनेल(1997) ''तर्कसंगत बुद्धि तथा भावनात्मक बुद्धि के आध्यात्मिक बुद्धि के साथ समाकलन का समर्थन करते हैं। तर्कसंगत बुद्धि हमें अंकों सूत्रों तथा वस्तुओं के साथ अन्तः क्रिया करने में सहायता प्रदान करती है, भावनात्मक बुद्धि हमें व्यक्तियों के साथ अन्तः क्रिया करने में सहायता प्रदान करती है और आध्यात्मिक बुद्धि हमें आंतरिक संतुलन (आत्मिक संतुलन) बनाए रखने में सहायता प्रदान करती है। आध्यात्मिक लब्धि का स्तर ज्ञात करने के लिए डोनेल अंग्राकित मानदण्डों का प्रयोग करने का सुझाव देते है –

- एक वांछित परिणाम को प्राप्त करने हेतु हमें कितने समय, धन, ऊर्जा तथा विचारों की आवश्यकता होती है –
- हमारे सम्बन्धों में द्विपक्षीय आधार पर सम्मान का स्तर क्या है।
- दूसरों के साथ व्यवहार में हम कितने ईमानदार है।
- दूसरों की गरिमा का सम्मान करने में हम स्वयं कितने गरिमापूर्ण है।
- कार्य दबाव की स्थिति में भी हम कितना शांत रहते है।
- हमारे निर्णय कितने परिपक्व है
- प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हम कितने शांतचित व स्थिर रहते हैं।
- कितनी सुगमता से हम दूसरे में दोषों के स्थान पर गुण देखते है।

एमन्स(2000) – दैनिक समस्या समाधान तथा लक्ष्यों की प्रप्ति में आध्यात्मिक सूचनाओं का प्रयोग आध्यात्मिक बुद्धि या आध्यात्मिक बुद्धिमता कही जा सकती है।

एमन्स ने मूलरूप से आध्यात्मिक बुद्धि के पांच घटक बताए हैं –

- भौतिक तथा पदार्थजन्य से श्रेष्ठ होने की क्षमता।
- चेतना के उच्चतम शिखर का अनुभव करने की क्षमता।
- दैनिक अनुभवों को परिष्कृत करने की क्षमता।
- समस्या समाधान में आध्यात्मिक स्रोतों का उपयोग करने की क्षमता।
- सदाचारी होने की क्षमता।

आध्यात्मिक बुद्धि के संबंध में फ्रांसिस वान के निम्नलिखित विचार उल्लेखनीय है – आध्यात्मिक बुद्धि मस्तिष्क एवं आत्मा के आंतरिक जीवन तथा इनके संसार में हाने से संबंधित है।

विगिल्सवथ (2006) – परिस्थितियों की परवाह किए बिना भीतरी एवं बाहरी शांति बनाए रखते हुए ज्ञान एवं करूणा के साथ कार्य करने की क्षमता ही आध्यात्मिक बुद्धि है। सिंडी विगिल्सवर्थ ने आध्यात्मिक बुद्धि का निर्माण करने वाली क्षमताओं को 21 कौशलों में विभाजित करते हुए डेनियल गोलमैन के भावनात्मक बुद्धि के चतुर्थांश माडल की भाँति व्यवस्थित किया। ये चार चतुर्थांश निम्नवत है –

- उच्च स्व या अहं आत्म जागरूकता।
- सार्वभौमिक जागरूकता।
- उच्च स्व या अहं आत्म श्रेष्ठता।
- आध्यात्मिक उपस्थिति या सामाजिक श्रेष्ठता।

उच्च स्व या अहं आत्म जागरूकता

1. स्वयं के वैश्विक दृष्टिकोण के प्रति जागरूकता।
2. जीवन उद्देश्यों के प्रति जागरूकता।
3. मूल्यों के अनुक्रम की जागरूकता।
4. विचारों की जटिलता।
5. अहं एवं उच्च स्व के प्रति जागरूकता।

सार्वभौमिक जागरूकता

6. अंर्तसम्बन्धों की जागरूकता।
7. पराजगत विचारों की जागरूकता।
8. समय बोध ही व्यापकता (दूरदर्शिता)
9. प्रत्यक्ष ज्ञान की सीमाओं की जागरूकता।
10. आध्यात्मिक नियमो के प्रति जागरूकता।
11. एकात्मकता का अनुभव

उच्च स्व या अहं आत्म श्रेष्ठता

12. आत्म विकास हेतु प्रतिबद्धता
13. आत्मस्फूर्तता
14. उद्देश्यपूर्ण एवं मूल्यपरक जीवन
15. संपोषणीय विश्वास
16. निर्देश प्राप्ति हेतु प्रयासरत

आध्यात्मिक उपस्थिति या समाजिक श्रेष्ठता

17. आत्मा का विज्ञ मार्गदर्शक।
18. बुद्धिमान परिवर्तन अभिकर्ता
19. सहानुभूतिशील/बुद्धिमतापूर्ण निर्णय
20. शांतिदायक उपचारात्मक उपस्थिति
21. जीवन के उतार–चढ़ाव का समर्थक

डेविड बी किंग (2007) ने कनाडा की ट्रेंट विश्वविद्यालय में आध्यात्मिक बुद्धि पर शोध कार्य किया उन्होने आध्यात्मिक बुद्धि की व्याख्या करते हुए बताया 'आध्यात्मिक बुद्धि को अभौतिक एवं वास्तविकता के उत्कृष्ट पक्षों पर आधारित अनुकूलनीय मानसिक क्षमताओं के एक समुच्चय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। डेविड आध्यात्मिक बुद्धि की चार मुख्य योग्यताओं या क्षमताओं को प्रस्तुत करते हैं –

1. आलोचनात्मक अस्तित्वपरक विचार
2. अस्तित्व की प्रकृति वास्तविकता, ब्रह्माण्ड, अंतरिक्ष समय एवं अन्य अस्तित्वपरक/आत्मविषयक मुद्दों तथा स्वयं के अस्तित्व से संबंधित अन्य अस्तित्वविहीन मुद्दों पर आलोचनात्मक रूप से विचार करने की क्षमता।
3. व्यक्तिगत अर्थ निर्माण, सभी भौतिक एवं मानसिक अनुभवों से व्यक्तिगत अर्थ एवं उद्देश्य निकालने की क्षमता।
4. श्रेष्ठतम जागरूकता – स्व के, अन्य के तथा भौतिक संसार के श्रेष्ठ पक्षों/आदर्शों को पहचानने की क्षमता।
5. सचेतनता का विकास – चेतनता के उच्चतम स्तर जैसे (शुद्ध चेतनता, वैश्विक चेतनता, एकता, एकात्मकता) तथा स्वयं के विचारों की अन्य स्थितियों (गहन विचारशीलता, ध्यान एवं प्रार्थना) में प्रवेश करने एवं बाहर निकलने की क्षमता।

आध्यात्मिक बुद्धि के विभिन्न प्रकारों में से एक है और यह स्वतंत्रतापूर्वक विकसित होती है। आध्यात्मिक बुद्धि को मनुष्य के मस्तिष्क तथा आत्मा के आंतरिक जीवन का उसके कार्य–व्यवहार के बाह्य जीवन में प्रकटीकरण के रूप में समझा जा सकता है। इसे खोज, जांच तथा अभ्यास द्वारा विकसित किया जा सकता है। आध्यात्मिक अनुभव भी इसके विकास में सहायता करते हैं। बुद्धिमत्तापूर्ण तथा सहानुभूतिशील व्यवहार से आध्यात्मिक परिपक्वता प्रकट होती है। अध्यात्मिक बुद्धि अर्थ दृष्टि तथा मूल्य विकास की हमारी क्षमता है। यह हमें स्वप्न देखने तथा उसे पूर्ण करने का प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है। यह हमारे विश्वासों और मूल्यों तथा हमारे कार्यों में इनके प्रयोग की ओर संकेत करती है।

सन्दर्भ –

1. डेसी, ई.एल. एण्ड आर.एम.र्यान, द ''वाट एण्ड वाई'' ऑफ गोल ड्यूसुइट्स ह्यूमन नीड्स एण्ड द सेल्फ डिटरमिनेशन ऑफ बिहेवियर सायकॉलोजिकल इनक्वायरी 2000, 11, 227–268.
2. ई कुर्ट्ज, के. कैटकैम : द स्प्रिचुअलिटी ऑफ इम्परफैक्शन. न्यू यॉर्क, बैन्टम बुक्स् , 1992.
3. एलीसन, सीजीजेडी बोर्डमैन, डीआर. विलियम्स, जेएस.जैक्सन, रिलिजिअस इनवोलमेंट,स्ट्रेस एण्ड मेंटल हेल्थ फाइन्ड.ग् फ्रॉम द 1995 डिट्रॉइट एरिया स्टडी सोशल फॉसेज 2001, 80(1), 215–249.54(1)
4. एमोन्स, आर., इज स्प्रीचुअलिटी एन इंटैलीजेंस? मोटिवकशन, कॉग्निशन् एण्ड द सायकॉलोजी ऑफ अलटीमेट कंर्सन्सः इन्टरनेशनल जरनल फार द सायकॉलोजी ऑफ रिलिजन 2000, 10(1),3–26, 37(२).
5. एमोन्स, आर., स्प्रीचुअलिटी ऑन इंटैलीजेंस प्रॉब्लम् एण्ड प्रॉस्पेक्टस्, इन्टरनेशनल जरनल फार द सायकॉलोजी ऑफ रिलिजन 2000, 10(1),57–64,37(३).
6. फण्ड, आर., नर्चरिग् अ चाइल्ड स्प्रीचुअलिटी जरनल ऑफ चाइल्ड हेल्थ केयर 2000, 4, 143–48.
7. गार्डनर, एच., इंटेलीजेंस रिफ्रेमड, मल्टिप्ल् इंटेलीजेंस फॉर द ट्वेन्टिफस्ट सेन्चुरी. न्यू यॉर्क, न्यू यॉर्कः बैसिक बुक, 1999,51.
8. इनजेरसॉल, आर. ई., स्प्रिचुअलिटी, रिलिजन् एण्ड काउन्सलिंग डिमेन्शन् एण्ड रिलेषनषिपस् काउन्सलिंग एण्ड व्हल्यू,1994,38,98–111.
9. कुमार, विनीत : इफेक्ट ऑफ स्प्रीचुअल इंटेलीजेंस एण्ड इमोशनल इंटेलीजेंस ऑन अचिवमेंट, मोटिव, रिएक्शन् टू फस्ट्रेशन सायकॉलोजिकल आडजस्टमेंट एण्ड स्कालॅस्टिक् परफोरमेंस ऑफ बैकवर्डस एण्ड नोन बैकवर्डस टेन्थ ग्रेड बॉयज, पी. एच.डी. डिपार्टमेंट ऑफ सायकॉलोजी, 2009.
10. मेयर, जान डी., स्प्रीचुअल इंटेलीजेंस और स्प्रीचुअल कॉन्शसनेस? इन्टरनेशनल सॉयको रिलिजन 2000,10:48–54.
11. मार्शल ,डी. जोहर एण्ड आइ. , एस.क्यू– स्प्रीचुअल इंटेलीजेंस द अल्टीमेट इंटेलीजेंस लंदन, ब्लूम्सबरी 2000.
12. नॉबेल, के.डी., स्प्रीचुअल इंटेलीजेंसः अ न्यू फ्रेम ऑफ माइन्ड एडवान्स डवलपमेंट 2000, 9, 1–29. 49(१).
13. पीडमोन्ट, आर.एल., स्प्रीचुअल ट्रॉन्सकेन्डेन्स एण्ड द साइन्टिफिक स्टडी ऑफ स्प्रीचुअलिटी जेरिहेब 2001, 67 : 4–14.